डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र
काव्य, इतिहास और व्याकरण

Date 23/05/20

चम्पू काव्य :

चम्पू काव्य उस काव्य का नाम है जिसमें गद्य और पद्य का संयुक्त रूप से प्रयोग होता है। 'गद्यपद्यमयी काचिच्चम्पूरित्यभिधीयते' (काव्यादर्श 1.31) तथा 'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते' (साहित्यदर्पण 6.336) 'चम्पू' शब्द चुरादि गण की गत्यर्थक चपि (चम्प्) धातु से औणादिक 'उन्' प्रत्यय करने पर और ऊङादेश करने पर बनता है। 'चम्पयति अर्थात् सहैव गमयति प्रयोजयति गद्यपद्ये इति चम्पूः' अर्थात् जिस रचना में गद्य और पद्य का सहयोग पूर्वक प्रयोग तथा समान भाव से प्रयोग किया जाता है, उसे चम्पू कहते हैं। हरिदास भट्टाचार्य ने 'चम्पू' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है - 'चमत्कृत्य पुनाति सहृदयान् विस्मीकृत्य प्रसादयति इति चम्पूः'। इस व्युत्पत्ति के अनुसार चम्पू में शब्द चमत्कार और अर्थ प्रसाद गुण होना चाहिए।

कुछ काव्यशास्त्रियों ने गद्य तथा पद्य के मिश्रित काव्य रूप को मिश्रकाव्य कहा है। नाटक आदि दृश्य काव्य के रूप हैं तो चम्पू मिश्र काव्य रूप है। वैसे तो वासवदत्ता, कादम्बरी, हर्षचरित आदि गद्य काव्यों में भी कहीं-कहीं पद्यों का प्रयोग हुआ है परन्तु वे प्रधानतया गद्य में ही हैं। नीति कथाओं में भी गद्य और पद्य का एक साथ प्रयोग किया गया है परन्तु उनमें पद्यों का प्रयोग या तो

कथा से प्राप्त होने वाली शिक्षा या किसी कथन की पुष्टि के लिए ही किया गया है जबकि चम्पू-काव्य में इन पद्यों का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन से नहीं किया जाता। वे कथानक के ही मुख्य भाग होते हैं। भोज ने चम्पू काव्य की प्रशंसा करते हुए कहा है कि इसमें गद्य और पद्य का वैसा ही सुन्दर सम्बन्ध होता है जैसा संगीत में गान और वाद्य का—

गद्यानुबन्ध रसमिश्रित पद्यसूक्तिः।
हृद्यापि वाद्यकलया कलितेव गीतिः॥
(रामायणचम्पू, बालकाण्ड-3)

चम्पू काव्य के उद्भव के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। वैदिक काल से ही गद्य पद्य का मिश्रित प्रयोग मिलता है। अथर्ववेद में गद्य पद्य का मिश्रित प्रयोग है। कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय, मैत्रायणी और काठक संहिताओं में गद्य पद्य का मिश्रण है। ऐतरेय ब्राह्मण का हरिश्चन्द्रोपाख्यान चम्पू शैली की सभी विशेषताओं से युक्त है। अनेक उपनिषद् भी गद्यपद्यमय हैं। तत्पश्चात् महाभारत, पुराण विशेष रूप से भागवत पुराण तथा बौद्ध जातक भी चम्पूशैली में लिखे गए। आर्यशूर की जातकमाला तो चम्पू-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। शिलालेखों में भी गद्य पद्य का मिश्रित प्रयोग है।

चम्पू काव्य का लक्षण सर्वप्रथम दण्डी ने काव्यादर्श में दिया। अतः 700 ई० से पूर्व

कुछ चम्पू काव्यों की रचना अवश्य हो चुकी होगी।
~~यह अत्यन्त खेद का विषय है कि संस्कृत~~

त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू चम्पूकाव्य का प्रथम उदाहरण है। इसका दूसरा नाम दमयन्ती कथा भी है। इसकी रचना ९०० ई० के लगभग हुई होगी क्योंकि त्रिविक्रमभट्ट राष्ट्रकूट के राजा इन्द्रराज तृतीय के आश्रित कवि थे। इन्द्रराज का ९१५ ईस्वी का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें त्रिविक्रमभट्ट और इन्द्रराज दोनों का ही उल्लेख है -

~~त्रि~~ त्रिविक्रमभट्टेन नेमादित्यस्य सूनुना।
कृता शस्ता प्रशस्तेयम् इन्द्रराजाङ्घ्रिसेविना॥

यह शिलालेख त्रिविक्रमभट्ट द्वारा ही लिखा गया है अतः इनका समय ९०० ईस्वी के लगभग ही होगा। नलचम्पू के अतिरिक्त इन्होंने मदालसा चम्पू नामक एक अन्य चम्पू की रचना भी की परन्तु इसके विषय में विशेष रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है। इति।